ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-12* March-2021
Anthology : The Research

बुजुर्गों की मोहभंग की समस्या
Elderly Disillusionment Problem

Paper Submission: 03/03/2021, Date of Acceptance: 20/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

कविता चौहान
शोधार्थी
(एम.फिल., पी.एच–डी.),
हिन्दी,
यमुना नगर, हरियाणा, भारत

सारांश

आज भारत युवाओं का देश होने के नाते प्रजातांत्रिक लाभ उठाने का पूरा अधिकार रखता हैं लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत का विश्व में बुजुर्गों की जनसंख्या के दूसरे स्थान पर है। अन्दाजा ऐसा है कि आज भारत में छः प्रतिशत ही बुजुर्ग हैं। लेकिन 2050 तक भारत में बुजुर्गों की जनसंख्या 20 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी। आधुनिक समय में जीवन शैली में बुजुर्गों का बढ़ता अकेलापन एक बड़ी समस्या का रूप ले चुका है। आज की जीवन की भागदौड़ में बुजुर्गों की उपेक्षा लगातार बढ़ती जा रही है। एकल परिवार बुजुर्गों की समस्या का मुख्य कारण हैं। मोबाइल फोन पर युवा पीढ़ी अपना समय बर्बाद करती है लेकिन जितना समय वह फोन पर बर्बाद करती है उसका यदि थोड़ा सा हिस्सा अपने घर के बुजुर्गों के साथ बिताए तो शायद कुछ उदासी दूर हो जाए। सारांश रूप से यही कहा जा सकता है कि भारत श्रवण कुमार का देश है लेकिन भारतीय समाज में आज के समय में बुजुर्गों को सम्मान नहीं मिलता है। उनके साथ भेदभाव किया जाता है। बुजुर्गों को धरोहर मानने की बजाए उन्हें केवल बोझ ही समझा जाता है। आधुनिक समय में इन्हें अमूल्य पूंजी समझने वाला समाज इनके प्रति बुरा व्यवहार करता है। बुजुर्गों की समस्या को देखकर तो ऐसा लगता है कि उसका अपना बीज ही जहरीला निकला हैं।

Today, India being a country of youths, has full right to take democratic advantage but they should not forget that India is second to the population of the elderly in the world. It is estimated that today only six percent of the elderly are in India. But by 2050, the population of the elderly in India will increase by 20 percent. In modern times, the increasing loneliness of the elderly in life style has taken the form of a big problem. In today's race of life, the neglect of bourgeoisie is constantly increasing. Single families are the main cause of the problem of the elders. The younger generation wastes their time on mobile phones, but if some part of the time they waste on the phone is spend with the elders of their household, then perhaps some sadness will go away. In summary, it can be said that India is the country of Shravan Kumar. But in Indian society, the elders do not get respect in today's time. They are discriminated against. Instead of considering the elderly as heritage, they are considered only as a burden. In modern times, a society which considers them as invaluable capital, behaves badly towards them. Seeing the problem of the elderly, it seems that his own seed has turned out to be poisonous.

मुख्य शब्द : पूंजी, धरोहर, जीवन शैली, विकलांगता, जहरीला, बीज, वृद्धावस्था, सुलझ, पिसवाने, लोरियां, वृद्धाश्रम, वृद्ध दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय, प्रावधान, संवेदनशील, प्रतिरोधक, वाट्सअप, फेसबुक, यूटयूब, संध्या बेला, पेंशन, त्रासद, गुलेल, तर्जुबा।

Capital, Heritage, Lifestyle, Disability, Poisonous, Seeds, Old Age, Solved, Grown, Lullabies, Old Age, Old Day, International, Provision, Sensitive, Resistant, WhatsUp, Facebook, YouTube, Evening, Pension, Tragedy, Catapult, Experience.

प्रस्तावना

वर्तमान युग में अनेक समस्याएं हमारे सामने मुँह पसारे खड़ी हैं लेकिन आज इस श्रवण कुमार के देश में बुजुर्गों की समस्या सबसे भयंकर रूप ले चुकी है। 21वीं सदी में एकाकीपन, शारीरिक विकलांगता, नई पीढ़ी से सामन्जस्य का अभाव, धनाभाव के साथ गम्भीर बीमारी हो जाना, संतान की समस्याओं से तनाव,

आधुनिक परिवेश असहनीय आदि समस्याओं का बुजुर्गों का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह जानना है कि वर्तमान समय में वृद्धों की समस्या क्या है और उसे कैसे दूर किया जा सकता है। बुजुर्गों को धरोहर मानकर उनका सम्मान करना चाहिए।

साहित्यावलोकन

वर्तमान शोध कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शोधार्थी ने उपलब्ध सामग्री की समीक्षा की है जो प्रस्तुत शोध कार्य के शीर्षक के आस–पास ही शोधार्थी ने बुजुर्गों की समस्या का वर्णन किया है कि वर्तमान में यह किस प्रकार समस्या भरा जीवन व्यतीत करते हैं।

पुष्पपाल सिंह लिखते हैं ''श्रवण कुमार के देश में माता–पिता वृद्धावस्था में जिस त्रास स्थिति को भोग रहे हैं, वह भयावह है, तीव्र औद्योगिक विकास और महानगरीय संस्कृति ने बड़ी तेजी से संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली की समाप्ति कर एकल परिवार–संस्कृति स्थापित कर दी। भूमडलीय अपसंस्कृति ने मनुष्य के सम्मुख लालसाओं का ऐसा अम्बार लगा दिया है कि धन का ही महत्त्व रह गया है। रिश्ते–नातों की सारी उष्मा धीरे–धीरे समाप्त हो रही है। फलतः न केवल भारत में अपितु वैश्विक परिदृश्य में वृद्धावस्था की समस्याएं विकट रूप ले रही हैं।''

डॉ0 रूपेन्द्र शर्मा लिखते हैं ''आधुनिक युग में जीवन की आपा–धापी के कारण जब सभी मूल्यों में संक्रमण की प्रक्रिया शुरू हुई और संयुक्त परिवार टूटे तो बुजुर्गों के सम्मान में अत्याधिक कमी का रूझान देखा गया। संतान के होते हुए भी आज वृद्ध अकेलेपन को झेलने के लिए विवश हैं।''[2]

कृष्णा सोबती के अनुसार ''परिवार सुरक्षा की एक नींव है और एक–दूसरे को सहारा देने वाली घनी छाँव भी।''[3]

डॉ0 पुष्पपाल सिंह लिखते हैं कि ''जिसको देखे इन पर गुलेल तान लेता है एकाध मिनट लिफ्ट देर से पहुँची तो कौन–सी आफत टूट पड़ी। इस घर में बच्चों की शिकायत नहीं आती जितनी बुढ़ढों की आती है। इस सोसायटी के लोग शायद कभी बूढ़े नहीं होंगे। न इनकी शक्ति क्षीण होगी, न कोई कष्ट आयेगा, न हारी–बीमारी।''[4]

प्राक्कल्पना

इस शोध कार्य को शुरू करने से पहले शोधार्थी के मन में अनेक प्राक्कल्पनाओं ने मन में जन्म लिया है जो इस प्रकार हैं–

1. वर्तमान समय में बुजुर्ग अपने जीवन से संतुष्ट होंगे।
2. बुजुर्गों को क्या धरोहर के रूप में सम्मान मिलेगा।
3. आने वाले समय में वृद्धों को सरकार के द्वारा सहायता प्राप्त होगी, क्योंकि पेंशन से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ हैं।
4. सरकार दिन–प्रतिदिन रिटायरमेन्ट की उम्र कम करती जा रही है। इससे भी बुजुर्ग पीढ़ी की समस्याएँ बढ़ रही हे।
5. अकेलेपन और अजनबीपन की समस्या से बुजुर्ग पीढ़ी मुक्त हो सकेगी।

उक्त प्राक्कल्पनाओं के प्रकाश में ही शोधार्थी ने यह अनुसंधान कार्य करते हुए शोध पत्र तैयार किया है।

शोध पद्धति

इस शोध कार्य के लिए द्वितीयक पुस्तकों के भंडार में से उन पुस्तकों का चयन किया गया है जो बुजुर्गों की समस्या को उजागर करती हैं। इनमें से कुछ पुस्तकों को वर्तमान शोध हेतु गहनता से अध्ययन किया गया है, अध्ययन करने के बाद जो परिणाम और निष्कर्ष निकले उन्हें शोध पत्र के अन्त में प्रस्तुत किया है।

बुजुर्गों से मोहभंग की समस्या

साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है। इक्कीसवीं सदी के साहित्य में भी वृद्धावस्था की समस्याओं का वर्णन मिलता है। वृद्धों की समस्याएँ बढ़ने का मुख्य कारण तो मानवीय मूल्यों में विघटन ही कहा जा सकता है या यों कहें कि अपना बीज ही जहरीला निकला है अर्थात मानवीय मूल्यों के अभाव के कारण ही आज वृद्धावस्था में अनेक समस्याएँ जन्म लेती हैं। यदि हम अपने घर–परिवार से ही यह पहल करें कि किस प्रकार से उम्र बढ़ने के साथ–साथ माता–पिता को बच्चों का साथ चाहिए और बच्चों को माता–पिता का किस प्रकार से सम्मान करना चाहिए। स्वार्थ की भावना को त्याग कर अपने कर्त्तव्यों को समझना चाहिए। जिस प्रकार से बचपन में माता–पिता अपनी सन्तान की आवश्यकताओं का ख्याल रखते हैं उसी प्रकार से बच्चों को भी वृद्धावस्था में उनकी आवश्यकताओं का ख्याल रखना चाहिए।

वर्तमान में जिस प्रकार से शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को आगे बढ़ने के लिए अनेक प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जा रहा है। उसी प्रकार से हमारे घर परिवार में मानवीय मूल्यों को भी सिखाने के लिए कुछ तो प्रयास करने ही चाहिए ताकि बुजुर्ग अपने को सुरक्षित पा सकें।

हमारे घर में जो वृद्ध हैं, वह कैसे इस उम्र में भी हमारा ख्याल रखते हैं तो हमारे तो हाथ–पैर सही से काम कर रहे है तो हमें भी उनकी सेवा करनी चाहिए। समाज सेवा के साथ–साथ बच्चों के मन में सेवा के भाव को जगाना चाहिए।

बुजुर्ग हमारी धरोहर

बुजुर्ग किसी भी परिवार, समाज के लिए धरोहर होते हैं। क्योंकि परिवार में शादी, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक कार्यक्रम तो होते हैं यदि हमें कोई काम करना नहीं आता तो हमें किसी बुजुर्ग से सलाह ले सकते हैं। यदि घर के किसी कार्यक्रम में कोई कमी होती है तो बड़े ही उससे अवगत करवाते हैं और यदि कोई समस्या उत्पन्न होती है तो उसे दूर करने का तरीका भी बताते हैं। यदि घर में बुजुर्ग हैं तो यदि घर का कोई भी सदस्य, बेटा–बहू, पोता–पोती आदि की समस्या को हल करने में भी मदद करते हैं। वह घर के कार्यों में भी सहायता करते हैं। हमें उन्हें यह एहसास हमेशा दिलाते रहना चाहिए कि घर में उनकी कितनी अहमियत है, आप हैं तो घर है।

डॉ0 रूपेन्द्र शर्मा लिखते हैं कि ''वृद्धों की समाज में चिंताजनक स्थिति को लेकर काफी ज्यादा

संवेदनशील है। उपन्यासकार लिखते हैं कि पाठक जीवन के अंतिम क्षणों में बुजुर्गों की सोच में होने वाले बदलाव को समझे। मान्यता है कि बुजुर्ग हमारे समाज का अभिन्न अंग है। जिनके पास हमारे लिए तर्जुबा मौजूद है। इसलिए इनका परिवार और समाज में सम्मान होना परमावश्यक है।

बुजुर्ग देते हैं लेते नहीं

यह बात सही है कि बुजुर्ग हमें देते हैं लेते नहीं हैं, वह बचपन में हमारे माता–पिता के रूप में हमारे लिए सबकुछ न्यौछावर कर देते हैं जैसे–जैसे सुख, चैन, पैसा, समय, जवानी। लेकिन हम क्या करते हैं शायद आप ने सोचा ही नहीं।

आजकल पति–पत्नी यदि दोनों नौकरी करते हैं और घर में बुजुर्ग हैं तो घर के काम, बच्चों को सम्भालना, बच्चों को स्कूल छोड़ना और फिर लाने के लिए, गेहूँ धोना, साफ करना, गेहूँ पिसवाने, बिल जमा करवाने, घर की देखभाल, घर की मुख्य सभी जिम्मदारी निभाते हैं। यदि यही कार्य हम किसी अन्य को पूरा करने के लिए कहते हैं तो शायद कोई करता है तो पैसा लेता है लेकिन बुजुर्ग नहीं लेते हैं क्योंकि वो आपको अपना समझते हैं।

बच्चों की देख–रेख में अहम भूमिका

हमारे घर के बुजुर्ग बच्चों की देख–रेख में अहम भूमिका निभाते हैं बच्चे जब घर में जन्म लेते हैं तो उनकी देखभाल करने में मदद देते हैं। अच्छी आदतों का विकास करने में, माता–पिता की सहायता करते हैं। बुजुर्गों के पास कहानियों का पिटारा होता है। बच्चों को कहानियों के माध्यम से अनेक अच्छी बातें और आदतें सिखाते हैं। अपने अनुभव के आधार पर ही बच्चों को छोटी–छोटी बीमारियों से निजात भी दिलवाते हैं। वह अच्छी–अच्छी लोरियाँ भी बच्चों को सुनाते हैं। कहानी बच्चों को अच्छी सीख देती है।

वृद्धावस्था में वृद्धों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो मुख्य रूप से इन्हें जीवन को सही ढंग से जीने में परेशानी पैदा करती है। वृद्धों के जीवन को संध्या बेला या डूबता सूर्य कह सकते हैं।

शारीरिक रूप से कमजोर

सही अर्थों में यही कहा जा सकता है कि वृद्धावस्था की संध्या बेला है। वृद्धावस्था में पहुँचते ही व्यक्ति यह समझ जाता है कि उसने जीवन में क्या प्राप्त कर लिया है और पाने के लिए जीवन में क्या शेष है। इस अवस्था में व्यक्ति भावी–पीढ़ी को अपने अधूरे कार्यों को पूरा करने का दायित्व सौंप देता है और उसके बाद उसे परिवार के सदस्य वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं। लेकिन ऐसा ठीक नहीं है। यदि हम इन वृद्धों को मान–सम्मान दे तो हमारे लिए वृद्धों को मान–सम्मान देना वरदान सिद्ध हो सकता है। यदि वृद्धों के शरीर के पहले की तरह काम करना बंद कर दिया तो उन्हें बेकार नहीं समझे। उनके पास ऐसे अनुभव हैं जो हमारी वृद्धावस्था को भी संवार सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 14 दिसम्बर 1990 में यह निर्णय लिया कि हर साल 1 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाए। 1 अक्टूबर 1901 को पहली बार अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। जब तक वृद्धों को सम्मान देने में घर, परिवार, समाज के द्वारा पहल नही होगी तब तक वृद्धों की रक्षा एवं स्वास्थ की सुरक्षा के लिए अनेक कानून एवं प्रावधान बनाए गए, फिर भी वृद्ध उपेक्षित है इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। जगह–जगह शहरों–गांव में खुले वृद्धाश्रम इसका प्रमाण हैं।

मामचन्द खण्डेला लिखते हैं कि ''एक अनुमान के अनुसार आज भारत में आठ करोड़ लोग 60 साल से ऊपर की आयु के हैं। लेकिन हमारी भारतीय संस्कृति में आज भी घर के बुजुर्गों के वृद्धाश्रमों में रहने की परम्परा नही है। देखा जाए तो समाज के लिहाज से बुरा भी माना जाता है।''[4]

अजय शर्मा एक मार्मिक दृश्य का वर्णन इस प्रकार करते हैं ''कभी इसको मेरे खाँसने पर आपत्ति होती है और कभी काम न करने पर। जब देखो यही कहती रही है कि मुझसे अपना बोझ तो उठाया नहीं जाता। ऐसे में तुम्हारा बोझ कैसे उठाऊँ।''

वृद्धावस्था में अकेलेपन की समस्या

वृद्धों को अकेलेपन और बेगानेपन के कारण कुंठित एवं संत्रास से युक्त जीवन जीना पड़ता है। आज हम जिस युग में जी रहे हैं उस युग में वृद्धों और युवा के बीच संवेदनशीलता की खाई इतनी गहरी हो गई है कि बुजुर्गों को अनावश्यक तनाव सहन करना पड़ रहा है। वृद्ध होने पर रोगी की प्रतिरोधक क्षमता में कमी, थकान, कार्यशीलता में कमी आ जाती है। जीवन में अकेलापन व्यक्ति को मानसिक, शारीरिक तौर पर उसे कमजोर बना देता है। जिससे वह परिवार में अच्छे सम्बन्ध नहीं बना पाता है। वे अपनी कहना चाहता है, दूसरों की सुनना चाहता है। यहाँ हमारे पास उनकी बात सुनने का समय नहीं है। पर यदि हम चाहे तो आजकल मोबाइल पर लगाने वाला समय उनके साथ बिताये शायद उससे सही मार्गदर्शन और बुजुर्ग का अकेलापन दूर हो जाएगा।

आधुनिक परिवेश असहनीय

21वीं सदी तो मोबाइल की सदी है। मोबाइल तो जैसे जीवन की आधारभूत ही बन गया है। पहले तो युवा पीढ़ी कुछ समय अपने घर के बुजुर्ग के साथ व्यतीत कर लेती थी लेकिन जब से मोबाइल आए हैं तो तब से तो बस शायद लोग घर के बुजुर्ग के साथ दो प्यार के बोल भी नहीं बोलते हैं। खाली समय में वाट्सएप, फेसबुक, यूट्यूब पर लगे रहते हैं। पुरानी पीढ़ी के लोग नए परिवर्तन को न तो समझ पा रहे हैं और न ही स्वीकार कर पा रहे हैं। आज के मनुष्य को अधिकतम भौतिक वस्तुओं को पा लेने के लिए दौड़ लगानी पड़ रही है। जिसके लिए उसने अपने जीवन को अधिक से अधिक समय व्यय करना पड़ता है। उसके पास अपने लिए, अपनों के लिए समय नहीं बच पाता है। उसका समय का अभाव बुजुर्गों को अपने प्रति उपेक्षा का अहसास कराना है और इस प्रकार से बुजुर्ग के इस असहनीय परिवेश से भी कुंठित है।

पर–निर्भरता प्रौढ़ पुरूष की मुख्य समस्या

बुजुर्ग अपने जवानी के दिनों में अपने परिवार का पालन–पोषण करता है। वह घर बनाता है, बच्चों को आधारभूत आवश्यकताएँ पूरी करता है। लेकिन अपनी संध्या बेला के समय धन की समस्या को लेकर परेशान

रहने लगता है। आने वाले समय में तो पेंशन भी नाममात्र ही है तब तो बुजुर्गों का क्या हाल होगा, यह तो भगवान ही जानता है। अनेक वृद्धों की आर्थिक रूप से अपने परिजनों जैसे पुत्री–पुत्र आदि पर निर्भर रहना पड़ता है। व्यक्ति का आत्मसम्मान भी दाव पर लग जाता है। आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पाती हैं। कुंठित जीवन व्यतीत करना पड़ता है क्योंकि वह पहले आत्मनिर्भर था।

21वीं सदी में पेंशन की समस्या

21वीं सदी में तो बुजुर्गों को पेंशन की समस्या से जूझना पड़ रहा है। आने वाले समय में पेंशन को और कम कर दिया है। यदि मिलेगी तो आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाएगी। सरकार को पेंशन की समस्या पर भी विचार करना चाहिए। इतनी पेंशन तो मिलनी ही चाहिए जिससे व्यक्ति को आत्मसम्मान से जीने में दिक्कत न हो।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अपनी ही संतान को अपने हाथों से निकलने और मर्यादाओं को लांघते देखकर इनकी स्थिति दयनीय है। यदि हमारी कोई आज के युग में सहायता कर सकता है तो वह हमारी शिक्षा, संस्कृति, आचार संहिता, हमारी परम्परा ही है क्योंकि यदि हम अपना और बच्चों का भविष्य अच्छा देखना चाहते हैं तो हमें शिक्षा प्रणाली में सुधार लाना होगा। हमें बुजुर्गों को धरोहर मानकर सम्मान करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पुष्पपाल सिंह, ''21वीं शती का हिन्दी उपन्यास'', पृ0 सं0 220*
2. *कृष्ण सोबती, ''समय–सरागम उपन्यास'', पृ0 सं0 65*
3. *डॉ0 रूपन्द्रि शर्मा, ''बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में जीवन दृष्टि'', पृ0 118*
4. *मामचन्द खण्डेला, ''आधुनिकता और भारतीय समाज'', पृ0 161*
5. *अजय शर्मा, ''खुली हुई खिड़की'', पृ0 54*
6. *''परिवार'' उपन्यास, पृ0 सं0 131*